अध्याय 16

अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था

1. अर्थशास्त्र का अर्थ

मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित होती है परन्तु इन आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने हेतु उपलब्ध साधन सीमित होते है। अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु मनुष्य को विभिन्न प्रकार की आर्थिक एवं अनार्थिक क्रियाएं करनी पड़ती है। व्यक्ति एवं समाज के आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है। दूसरे शब्दों में **मनुष्य द्वारा सम्पन्न की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन ही अर्थशास्त्र है।**

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में जन्म से मृत्यु तक तथा अपनी दैनिक दिनचर्या में प्रातःकाल जागने से लेकर रात्रि को सोने तक विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्पादित करता है। इन सभी मानवीय क्रियाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

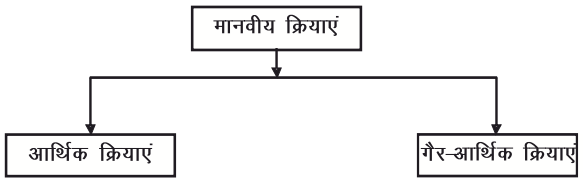

(क) आर्थिक क्रियाएं

मनुष्य द्वारा सम्पादित वह क्रियाएं जिनका मुद्रा के रूप में मापन संभव है आर्थिक क्रिया कहलाती है। किसान द्वारा खेती करना, श्रमिक द्वारा उद्योगों में सेवा देना, अध्यापक द्वारा कक्षा में पढ़ाना, कर्मचारी द्वारा कार्यालय में कार्य करना आदि सभी क्रियाएं आर्थिक है, जिन्हें जीविकोपार्जन के उद्देश्य से सम्पादित किया जाता है।

अर्थशास्त्र की विषय–सामग्री के अनुरूप प्रमुख आर्थिक क्रियाओं को निम्न भागों में बांटा जा सकता है:–

(I) उत्पादन

कच्चे माल का निर्मित माल में रूपान्तरण जिससे आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके, उत्पादन कहलाता है। दूसरे शब्दों में उपयोगिता का सृजन करना ही उत्पादन है। लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन करने वाला उत्पादक कहलाता है। उदाहरण के लिए किसान द्वारा खेती करना। इस उदाहरण में किसान एक उत्पादक है एवं खेती का कार्य उत्पादन है।

(ii) उपभोग

आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष सन्तुष्टि हेतु वस्तुओं व सेवाओं का प्रयोग करना उपभोग कहलाता है। आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग करने वाला उपभोक्ता कहलाता है। उदाहरण के लिए सचिन द्वारा खेलने हेतु बाजार से खरीदी गई फुटबाल। इस उदाहरण में सचिन एक उपभोक्ता है एवं फुटबाल का क्रय उपभोग है।

(iii) विनिमय

विनिमय का अर्थ है व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए स्वयं द्वारा उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं को दूसरे व्यक्तियों को देकर बदले में दूसरों के द्वारा उत्पादित वस्तुएं व सेवाएं प्राप्त करना विनिमय कहलाता है। अन्य शब्दों में उपभोक्ताओं व उत्पादकों द्वारा बाजार में वस्तुओं व सेवाओं का किया गया क्रय–विक्रय विनिमय कहलाता है। उदाहरण के लिये कर्मचारी द्वारा कम्पनी में सेवा देना तथा सेवा के बदले कम्पनी से वेतन प्राप्त करना। इसी प्रकार किसी उपभोक्ता द्वारा बाजार से गेहूं खरीदना व बदले में उसकी कीमत का भुगतान करना आदि विनिमय है।

(iv) वितरण

वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन के लिए उत्पादक को उत्पादन के विभिन्न साधनों की आवश्यकता पड़ती है। उत्पत्ति के साधन पांच प्रकार के है– भूमि, पूंजी, श्रम, प्रबन्ध एवं साहस। उत्पत्ति के सभी साधनों के संयुक्त व सम्मिलित प्रयास से ही वस्तुओं का उत्पादन होता है। उत्पादन का उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में विभाजन ही वितरण कहलाता है। अन्य शब्दों में उत्पादन के विनिमय से प्राप्त आय का उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में विभाजन वितरण कहलाता है।

(ख) गैर–आर्थिक क्रियाएं

स्नेह, प्रेम, सामाजिक एवं धार्मिक कर्त्तव्य, शारीरिक आवश्यकता, देश प्रेम आदि भावनाओं से प्रेरित होकर सम्पादित

किया जाने वाला कार्य, लोगों द्वारा मन्दिर में की जाने वाली प्रार्थना आदि, की जाने वाली क्रियाएं गैर–आर्थिक क्रियाएं कहलाती है। इस प्रकार की गतिविधियों का मौद्रिक मूल्यांकन सम्भव नहीं होता है। उदाहरण के लिए बच्चों द्वारा खेल खेलना, गृहणी द्वारा स्वयं के परिवार के लिए किया जाने वाला कार्य, लोगों द्वारा मन्दिर में की जाने वाली प्रार्थना व्यक्ति द्वारा सामाजिक कार्य में योगदान आदि।

2.उत्पत्ति के साधन

उत्पादन एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। किसी भी वस्तु के उत्पादन को अनेक चरणों से होकर गुजरना पड़ता है। उत्पादन प्रक्रिया के सम्पादन हेतु विभिन्न उत्पादन साधनों की आवश्यकता होती है। किसी भी वस्तु की उत्पादित मात्रा उसके उत्पादन में प्रयोग किए गए साधनों की मात्रा पर निर्भर करती है। हम इन उत्पादकीय साधनों को निम्न भागों में बांट सकते है:–

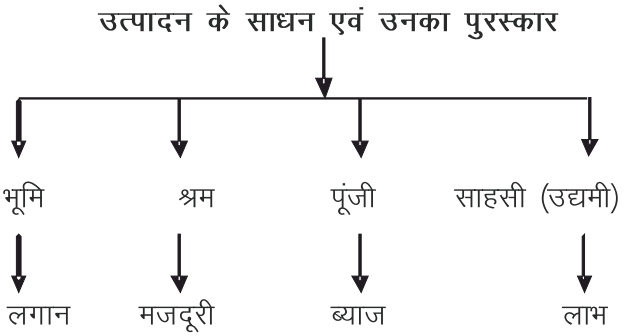

(क) भूमि

प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार भूमि, प्रकृति का निःशुल्क उपहार है। अर्थशास्त्र में 'भूमि' शब्द का अर्थ मात्र मिट्टी या धरातल ही नहीं है। भूमि में भूमि के अतिरिक्त प्राकृतिक संसाधन, जलवायु, वनस्पति, पर्वत, जल, खानें आदि सभी सम्मिलित है। उपलब्धता की दृष्टि से भूमि की आपूर्ति स्थिर है। भूमि उत्पादन का एक अचल घटक है क्योंकि भूमि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित नहीं किया जा सकता है। भूमि अपनी उत्पादकीय शक्ति (उर्वरा–शक्ति) व उपयोग के आधार पर अलग–अलग श्रेणी की होती है। उत्पादन प्रक्रिया में भूमि के प्रयोग के बदले भूस्वामी को दिया जाने वाला प्रतिफल लगान कहलाता है।

(ख) श्रम

वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन हेतु मनुष्य द्वारा किया गया शारीरिक व मानसिक प्रयास श्रम कहलाता है। प्रेम, सद्भावना एवं मनोरंजन के उद्देश्य से किया गया प्रयास या परिश्रम अर्थशास्त्र में श्रम नहीं माना जाएगा। केवल उस परिश्रम को ही श्रम माना जाएगा जो उत्पत्ति करने के उद्देश्य से किया जाए एवं जिससे किसी आर्थिक प्रतिफल की आशा हो। उदाहरण के लिए गृहिणी की सेवाएं श्रम नहीं मानी जाएगी जबकि नौकर की सेवाएं श्रम है। श्रम उत्पत्ति का एक साधन है जो प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य से जुड़ा है जबकि अन्य साधन प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य से सम्बन्धित नहीं होते है। श्रम उत्पत्ति का एक गतिशील साधन है। सभी श्रम उत्पादक नहीं होते है। अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि श्रम के द्वारा उत्पत्ति हो क्योंकि उत्पादन प्रक्रिया में कई बार प्रयास करने पर भी इच्छित परिणामों की प्राप्ति नहीं होती है। उत्पादन प्रक्रिया में श्रमिक को श्रम के बदले प्राप्त होने वाला प्रतिफल मजदूरी कहलाता है।

(ग) पूंजी

समस्त वस्तुएं एवं मानवीय योग्यताएं जो कि वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन में उपयोगी होती है एवं जिससे मूल्य की प्राप्ति होती है, सम्पत्ति कहलाती है। सम्पत्ति का कुछ भाग व्यर्थ पड़ा रहता है तथा कुछ भाग आगे और सम्पत्ति के उत्पादन के लिए प्रयुक्त किया जाता है। पूंजी मनुष्य की सम्पत्ति का वह भाग है जो और आगे उत्पत्ति करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। पूंजी उत्पादन का ही एक उत्पादित घटक है जिसे प्राकृतिक साधनों के साथ उपयोग करके मनुष्य द्वारा अर्जित किया जाता है। पूंजी को उत्पादन का मानवीय उपकरण भी कहा जा सकता है। मशीन, उपकरण, कारखाने, यातायात आदि पूंजी के उदाहरण है।

(घ) साहसी अथवा उद्यमी

उत्पादन प्रक्रिया में भूमि, पूंजी व श्रम का गतिशीलन करने वाला साहसी अथवा उद्यमी कहलाता है। साहसी उत्पत्ति के सभी साधनों का उचित अनुपात निर्धारित कर उत्पादन करता है। उद्यमी जोखिमों को सहन कर उत्पादन करता है, अतः इसे साहसी भी कहा जाता है। बिना जोखिम उठाये उत्पत्ति हो ही नहीं सकती। अतः साहसी का काम उत्पादन कार्य प्रारम्भ करना व उसकी जोखिमों को सहन करना माना गया है। साहसी को प्रबन्धक, संगठनकर्ता भी कहा जाता है। साहसी का पुरस्कार उत्पादन का वह भाग होता है जो उत्पत्ति के सभी साधनों को भुगतान करने के पश्चात् शेष बचता है। इसे लाभ कहते है, परन्तु लाभ निश्चित नहीं होता। उत्पादन प्रक्रिया में साहसी लाभ भी कमा सकता है और उसे हानि का सामना भी करना पड़ सकता है।

3.अर्थव्यवस्था

प्रत्येक देश में व्यक्ति अपनी जीविकोपार्जन के लिए विभिन्न प्रकार के आर्थिक क्रियाकलापों में संलग्न है। किसान हो या श्रमिक, उद्योगपति हो या दुकानदार, अध्यापक हो या डॉक्टर, सभी अपनी अपनी आजीविका कमाने हेतु कार्य कर रहे हैं। विभिन्न आर्थिक वर्गों द्वारा सम्पादित इन विभिन्न प्रकार के आर्थिक कार्यों के सम्पादन हेतु किसी सुव्यवस्थित व्यवस्था, संगठन अथवा प्रणाली की आवश्यकता होती है। इस प्रणाली या व्यवस्था को ही अर्थव्यवस्था कहा जाता है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि एक ऐसी प्रणाली अथवा व्यवस्था जिसके द्वारा लोग अपना जीविकोपार्जन करते है, अर्थव्यवस्था कहलाती है।

अर्थव्यवस्था एक ऐसा ढांचा है जिसमें विभिन्न वस्तुओं के उत्पादकों के बीच आपसी तालमेल व परस्पर सहयोग का जन्म होता है। अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जिसमें उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण आदि आर्थिक क्रियाएं निरन्तर चलती रहती है। सामान्यतः यह कहा भी जा सकता है कि एक ऐसी व्यवस्था जिसके तहत किसी निश्चित क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता है, अर्थव्यवस्था कहलाती है। उदाहरण के लिए शक्कर का उत्पादन शक्कर मिल द्वारा किया जाता है। शक्कर के उत्पादन के लिए उत्पादक गन्ना किसान से, मशीनें व उपकरण उद्योगों से तथा बिजली ऊर्जा संयन्त्रों से प्राप्त करता है। उत्पादित शक्कर को देश के विभिन्न भागों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने ले जाने के लिए परिवहन के साधनों (रेल, ट्रक, जहाज आदि) की आवश्यकता पड़ती है। शक्कर उत्पादन हेतु विभिन्न उत्पादकों के मध्य परस्पर सहयोग व तालमेल का यह ढांचा ही अर्थव्यवस्था है।

आपके गॉव अथवा कस्बे की अर्थव्यवस्था

सम्पूर्ण गॉव अथवा कस्बे के निवासियों के आर्थिक क्रियाकलापों का अध्ययन।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

राजस्थान राज्य के निवासियों के आर्थिक क्रियाकलापों का अध्ययन।

भारत की अर्थव्यवस्था

सम्पूर्ण देश के निवासियों के आर्थिक क्रियाकलापों का अध्ययन।

4. अर्थ व्यवस्था के प्रकार

किसी भी देश में उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण आदि आर्थिक क्रियाओं का संचालन, अर्थव्यवस्था के स्वरूप पर निर्भर करता है। देश में आर्थिक क्रियाओं के संचालन में राज्य का हस्तक्षेप कितना होगा ? उत्पत्ति के साधनों पर स्वामित्व का आधार क्या होगा? आर्थिक क्रियाओं के संचालन का उद्देश्य क्या होगा? आदि आधारों पर विश्व की विभिन्न अर्थ व्यवस्थाओं को हम निम्न तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं:–

(क) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था

(ख) समाजवादी अर्थव्यवस्था

(ग) मिश्रित अर्थव्यवस्था

(क) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था

अर्थ : पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था से अभिप्रायः एक ऐसी आर्थिक प्रणाली से है जिसमें उत्पत्ति के सभी साधनों पर निजी व्यक्तियों का स्वामित्व व नियंत्रण होता है तथा आर्थिक क्रियाओं का संचालन निजी हित एवं लाभ प्रेरणा के उद्देश्य से किया जाता है। सरकार आर्थिक कामकाज के प्रबन्ध में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करती।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को 'स्वतंत्र बाजार अर्थ व्यवस्था', 'बाजार अर्थव्यवस्था' एवं 'मुक्त अर्थव्यवस्था' भी कहा जाता है। विश्व में इस आर्थिक प्रणाली का उदय सन् 1760 से 1820 के मध्य औद्योगिक क्रान्ति के समय हुआ। आज विश्व के किसी भी देश में पूंजीवाद अपने विशुद्ध रूप में नहीं है, परन्तु आर्थिक गतिविधिओं के संचालन व नियन्त्रण के आधार पर संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, इटली, जापान, फ्रांस, आस्ट्रेलिया आदि देशों के अर्थतन्त्र पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था कहलाते है।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की विशेषताएं :

इस अर्थ व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है:

I. निजी सम्पत्ति का अधिकार :

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के घटक जैसे भूमि, खानें, कारखाने, मशीनें आदि सभी पर निजी व्यक्तियों का स्वामित्व होता है। इन साधनों के स्वामी अपनी इच्छानुसार इनका प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। व्यक्तियों को सम्पत्ति रखने, उसे बढ़ाने व उसे प्रयोग करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

ii. उपभोक्ताओं को चयन की स्वतंत्रता :

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता प्रभुसत्ता सम्पन्न होते है अर्थात् उपभोक्ता के खर्च व उसकी इच्छा के अनुरूप ही उत्पादक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। इसे ही उपभोक्ता की संप्रभुता कहा जाता है। इस आर्थिक प्रणाली में उपभोक्ता अपनी आय को इच्छानुसार व्यय करने के लिए स्वतंत्र होता है। उपभोक्ता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होने के कारण इस आर्थिक प्रणाली में उपभोक्ता को 'बाजार का राजा' कहा जाता है।

iii. उद्यम की स्वतंत्रता

प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी भी आर्थिक गतिविधि का संचालन कर सकता है। उत्पादन करने की, तकनीक के चयन करने की, उद्योग स्थापित करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होने के कारण पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ''स्वतंत्र उद्यम वाली अर्थव्यवस्था'' भी कहलाती है।

iv. प्रतिस्पर्द्धा

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में विक्रेताओं के बीच अपने–अपने उत्पाद अथवा वस्तुओं को बेचने के लिए तथा क्रेताओं के बीच अपनी–अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रतियोगिता चलती रहती है। जिससे बाजार में कुशलता बढ़ती है। विज्ञापन देना, उपहार देना, मूल्य में कमी कर देना आदि तरीके प्रतिस्पर्द्धा हेतु अपनाएं जाते हैं।

v.निजी हित एवं लाभ का उद्देश्य

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किसी भी कार्य को करने का निर्णय अथवा किसी वस्तु के उत्पादन का निर्णय मुख्य रूप से लाभ भावना के आधार पर ही लिया जाता है अर्थात् काम करने में क्या व कितना लाभ प्राप्त होगा? इसी प्रकार उपभोक्ता भी वस्तुओं का उपभोग निजी हित के लिए ही करते हैं।

vi.वर्ग संघर्ष

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में समाज दो वर्गों में विभाजित हो जाता है। एक ओर साधन सम्पन्न वर्ग होता है जो पूंजीपति कहलाता है तथा दूसरी ओर साधन विहीन वर्ग होता है जो श्रमिक कहलाता हैं। पूंजीपतियों में लाभ बढ़ाने का उद्देश्य व श्रमिकों में शोषण से बचने का उद्देश्य वर्ग–संघर्ष को जन्म देते हैं।

vii.आय की असमानता

सम्पत्ति के असमान वितरण के कारण पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में गरीब व अमीर के बीच विषमता की खाई बढ़ती जाती है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विश्लेषण इस प्रकार से कर सकते हैः–

(क) गुण

i. उत्पादन क्षमता व कुशलता का बढ़ना
ii उपभोक्ताओं को अधिक सन्तुष्टि
iii साधनों का अनुकूलतम उपयोग
iv तकनीकी विकास
v रहन–सहन का स्तर ऊँचा होना
vi आर्थिक स्वतंत्रता
vii शोध, अनुसंधान का विकास

(ख) दोष

i आय व सम्पत्ति की विषमताएं
ii क्षेत्रीय असमानताएं
iii आर्थिक अस्थिरता
iv एकाधिकारों का सृजन
v उत्पादकीय संसाधनों का दुरूपयोग
vi अमर्यादित उपभोग
vii नैतिक मूल्यों में गिरावट

(ख) समाजवादी अर्थव्यवस्था

अर्थ : समाजवादी अर्थव्यवस्था से अभिप्रायः एक ऐसी आर्थिक प्रणाली से है जिसमें उत्पत्ति के सभी साधनों पर सरकार द्वारा अभिव्यक्त सम्पूर्ण समाज का स्वामित्व होता है तथा आर्थिक क्रियाओं का संचालन एक केन्द्रीय सत्ता द्वारा सामूहिक हित एवं कल्याण के उद्देश्य से किया जाता है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था को 'समान अर्थव्यवस्था' अथवा 'केन्द्रीय नियोजित अर्थव्यवस्था' भी कहा जाता है।

कार्ल मार्क्स द्वारा विकसित समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होकर सन् 1917 में रूस में क्रान्ति हुई एवं समाजवादी अर्थव्यवस्था का प्रारम्भ हुआ।

रूस के बाद चेकोस्लावाकिया, बुल्गारिया, चीन, यूगोस्लोविया, वियतनाम आदि देशों ने इस आर्थिक प्रणाली को अपनाया, परन्तु वर्तमान में चीन, उत्तरी कोरिया आदि को छोड़कर शेष देशों ने इस प्रणाली को छोड़ दिया है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था की विशेषताएं :

समाजवादी अर्थव्यवस्था के कुछ महत्वपूर्ण लक्षण या विशेषताएं निम्नलिखित हैः–

i. .साधनों पर सामूहिक स्वामित्व

इस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के भौतिक साधन अर्थात् भूमि, वन, कारखानों, पूंजी, खानों आदि पर सरकार या समाज का स्वामित्व व नियंत्रण होता है। इसके परिणामस्वरूप लाभ का उद्देश्य या निजी हित के लिए आर्थिक गतिविधियों का संचालन नहीं होता।

ii. उपभोक्ता चयन का अन्त

इस अर्थव्यवस्था में वस्तुओं में उपयोग हेतु उपभोक्ता के चयन की प्रभुसत्ता उन्हीं वस्तुओं तक रहती है जिन्हें सरकार के निर्देशानुसार उत्पादित किया गया है। सरकार द्वारा निर्धारित मात्रा में ही उपभोक्ता द्वारा उपभोग किया जाएगा।

iii. केन्द्रीय नियोजन अथवा आर्थिक नियोजन

समाजवादी अर्थव्यवस्था में सामाजिक–आर्थिक लक्ष्यों में निर्धारण व प्राप्ति हेतु एक केन्द्रीय सत्ता होती है। महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय जैसे क्या उत्पादन करना है? उत्पादन कैसे करना है। आदि निर्णय केन्द्रीय सत्ता द्वारा ही लिए जाते है।

iv.सामाजिक लाभ का उद्देश्य

समाजवादी अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय सत्ता द्वारा सभी प्रकार के आर्थिक निर्णय अधिकतम सामाजिक व सामूहिक लाभ के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही लिए जाते है न कि निजी लाभ के उद्देश्य से।

v. आर्थिक समानता

समाजवादी अर्थव्यवस्था समान कार्य के लिए समान मजदूरी के सिद्धान्त पर कार्य करती है। अतः इस आर्थिक प्रणाली में वर्ग संघर्ष की समाप्ति हो जाती है। साथ ही निजी पूँजी स्थापित करने हेतु अवसरों की कमी के कारण आय की असमानता भी कम हो जाती है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था का विश्लेषण

गुण

i. धन व आय का समान वितरण
ii. अवसरों की समानता
iii. नियोजित अर्थव्यवस्था
iv. वर्ग–संघर्ष का अन्त
v. आर्थिक उतार–चढ़ाव की समाप्ति (आर्थिक स्थिरता)
vi. काम का अधिकार
vii. लोगों को न्यूनतम जीवन स्तर का आश्वासन

दोष

i. नौकरशाही व लालफीताशाही
ii. व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रतिबन्धित
iii. उत्पादन में कमी
iv. आर्थिक प्रेरणा का अभाव
v. उपभोक्ता की स्वतंत्रता में कमी
vi. अधिकारों का हनन (निजी सम्पत्ति का अधिकार)

(ग) मिश्रित अर्थव्यवस्था

अर्थ : यह आर्थिक प्रणाली पूंजीवाद व समाजवाद दोनों के आदर्श लक्षणों का देश की आवश्यकतानुसार समावेश करने का एक प्रयास है। दूसरे शब्दों में यह प्रणाली पूंजीवाद व समाजवाद के बीच का रास्ता है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जिसमें निजी और सार्वजनिक क्षेत्र दोनों का सह–अस्तित्व होता है। यह निजी उपक्रम तथा निजी लाभों का समर्थन करती है परन्तु साथ ही साथ सम्पूर्ण समाज के हितों की रक्षा के लिए सरकार के अस्तित्व को भी महत्वपूर्ण मानती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में यह प्रयास रहता है कि निजी और सार्वजनिक क्षेत्र दोनों संयुक्त रूप से इस प्रकार कार्य करें जिससे देश के सभी वर्गों का आर्थिक कल्याण बढ़े एवं देश में वृद्धि व विकास की संभावनाओं का प्रसार हो। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने इसी प्रणाली को अपनाया है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ :

मिश्रित अर्थव्यवस्था के कुछ महत्वपूर्ण लक्षण या विशेषताएं निम्नलिखित हैः–

i. निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र का सह अस्तित्व

मिश्रित अर्थव्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है निजी तथा सार्वजनिक उपक्रम दोनों का सह अस्तित्व। सामाजिक लाभ के उद्देश्य से महत्वपूर्ण उद्योगों पर सरकार का एकाधिकार होता है जैसे– पेयजल, विद्युतीकरण, उर्जा उत्पादन, आन्तरिक व बाहरी सुरक्षा आदि। इस आर्थिक प्रणाली में भारी व आधारभूत उद्योगों का संचालन व विकास सरकार

द्वारा किया जाता है तथा कुटीर उद्योग, कृषि कार्य आदि निजी क्षेत्र के अधीन होते हैं। इनके अतिरिक्त संयुक्त क्षेत्र की स्थापना भी की जाती है।

ii. प्रशासित मूल्य

मिश्रित अर्थव्यवस्था में वस्तु की कीमत निर्धारण की दोहरी प्रणाली होती हैं। निजी क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं की कीमत बाजार में स्वतंत्र रूप से होती हैं परन्तु सरकार कुछ आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों को तय करने का अधिकार अपने पास रखती है जो सामान्य आदमी द्वारा उपयोग की जाती है।

उदाहरण के लिए भारत में पेट्रोल, डीजल, एल.पी.जी.गैस आदि के मूल्य सरकार द्वारा तय किए जाते हैं।

iii. आर्थिक नियोजन

मिश्रित अर्थव्यवस्था एक नियोजित अर्थव्यवस्था होती है जिसमें सरकार पूर्ण नियोजन के साथ सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों का निर्माण करती है। इन्हीं नीतियों के अनुरुप सामाजिक कल्याण के कार्यो को करती है जैसे– नदी घाटी परियोजना का निर्माण कर पेयजल, सिंचाई, पर्यटन, मछली पालन, विद्युत उत्पादन आदि कार्यों का विकास करना तथा सामाजिक लाभ के लिए आम जनता को आपूर्ति करना।

iv. क्षेत्रीय सन्तुलन

सामाजिक महत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर सरकार का नियंत्रण होने के कारण सरकार नियोजन प्रक्रिया को इस प्रकार क्रियान्वित करती है कि सभी क्षेत्रों का समान रुप से विकास हो सके। जैसे– शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, परिवहन, पेयजल इत्यादि सुविधाओं का विस्तार एवं विकास।

v. व्यक्तिगत स्वतन्त्रता

मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र में उत्पादन करने, उपभोग करने, विनिमय तथा वितरण करने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता होती है, लेकिन यह स्वतंत्रता सामाजिक हित या कल्याण में वृद्वि करने की दिशा पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल सके इसलिए सरकार इस स्वतंत्रता पर आंशिक नियंत्रण रखती है। जैसे– सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान तथा मद्यपान का निषेध होना, बाल विवाह, मृत्यु भोज, भव्य विवाह आयोजन इत्यादि पर रोक।

मिश्रित अर्थव्यवस्था का विश्लेषण

गुण

i. पूंजीवाद–समाजवाद दोनों के गुणों का समावेश

ii. व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का संरक्षण (व्यवसाय व उपभोग की)

iii. वर्ग संघर्ष में कमी

iv. आपसी विषमताओं में कमी

v. आर्थिक उतार–चढ़ावों पर नियन्त्रण

vi. अल्प विकसित देशों का संतुलित विकास

दोष

i. संचालन कठिन (समन्वय का अभाव)

ii. अस्थायी लाभ

iii. आर्थिक विकास की मध्यम गति

iv. औपचारिकता व पक्षपात को बढ़ावा (उत्पादन दक्षता में कमी)

5. प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन

आर्थिक विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों के तीव्र विदोहन, वस्तुओं व सेवाओं के अमर्यादित व असंयमित उपभोग, तीव्र औद्योगिकरण से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट, बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हो रहे मानवीय मूल्यों व नैतिकता के ह्रास ने विश्व की पूंजीवादी एवं समाजवादी आर्थिक प्रणालियों को विकास के एक वैकल्पिक मार्ग को खोजने पर विवश कर दिया है। ऐसी परिस्थिति में भारतीय आर्थिक चिन्तन व परम्परा का अध्ययन विश्व को न केवल आर्थिक प्रणाली का एक नया विकल्प दे रहा है अपितु वर्तमान आर्थिक समस्याओं के समाधान की दिशा में भी मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन उन सभी आर्थिक विचारों का सार है जिन्हें भारत के सभी प्राचीन ग्रन्थों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। भारत के वैभवशाली अतीत की जानकारी इन ग्रंथों से ही प्राप्त होती है जिसके कारण भारत को 'विश्वगुरू' का सम्मान प्राप्त हुआ। प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं का अध्ययन इस प्रकार है:–

(क) प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन के प्रमुख स्रोत ग्रन्थों में अर्थशास्त्र, आर्थिक क्रियाएं आदि शब्दों का प्रयोग विशुद्ध रूप से न होकर व्यापक रूप में होता था। अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि सभी एक–दूसरे से जुड़े थे। प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन के स्रोत ग्रन्थों की संख्या बहुत अधिक हैं एवं उनमें दिए गए विचारों का क्षेत्र भी अत्यन्त व्यापक है। उनमें से कुछ प्रमुख ग्रन्थों का परिचय निम्नानुसार है।

क्र. सं.	[illegible]	संख्या	विवरण
1.	वेद	4	ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
2.	उपनिषद्	108 से 220 (11 उपनिषद् ही प्रमुख)	ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, प्रश्न, छान्दोग्य, बृहदारण्यक एवं श्वेताश्वतर
3.	स्मृतियाँ	100 से अधिक	प्रमुख स्मृतियाँ – मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति आदि।
4.	पुराण	18	प्रमुख पुराण – भागवत पुराण, अग्नि पुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण आदि
5.	महाकाव्य	2	रामायण व महाभारत
6.	नीति साहित्य	–	शुक्र नीति, विदुर नीति, कामन्दक नीति, बृहस्पति नीति, कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि
7.	लौकिक काव्य एवं अन्य संस्कृत साहित्य	–	कालिदास, बाणभट्ट, [illegible], दण्डी, वराहमिहिर आदि के ग्रन्थ

(ख) प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन की आधारभूत मान्यताएं एवं अवधारणाएं:–

प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन निम्न मूलभूत मान्यताओं पर आधारित है ।

i. एकात्म मानव

जहाँ पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली व्यक्ति को धन अर्जित कर अधिक से अधिक सम्पत्ति बनाने वाले 'आर्थिक मानव' के रूप में प्रस्तुत करती है, वहीं दूसरी ओर समाजवादी व्यवस्था उसे मशीन की तरह ही काम करने वाला एक उत्पत्ति का साधन मानती है। **प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन इन दोनों अवधारणाओं के विपरीत व्यक्ति को 'एकात्म मानव' के रूप में प्रस्तुत करता है जिसके अनुसार मानव शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा का एकीकृत रूप है।** मनुष्य जीवन का सर्वांगीणं विचार इन चारों तत्वों (शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा) का समग्र विचार है। व्यक्तित्व के इन चारों पक्षों के सन्तुलित विकास हेतु ही प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन चार पुरूषार्थों – धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को कर्त्तव्य के रूप में मनुष्य के समक्ष प्रस्तुत करता है। अतः स्पष्ट है कि भारतीय आर्थिक चिन्तन में मनुष्य की भौतिक प्रगति के साथ–साथ उसकी नैतिक व आध्यात्मिक प्रगति पर भी बल दिया गया है जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो सके।

ii. समग्र विवेकशीलता

पूंजीवादी आर्थिक विचारधारा व्यक्ति को आर्थिक विवेकशील मानते हुए इस बात पर बल देती है कि एक व्यक्ति उत्पादक के रूप में उस वस्तु का उत्पादन करें जिसमें उसे अधिकतम लाभ की प्राप्ति हो। एक उपभोक्ता उन वस्तुओं को उपभोग करें जिसमें उसे अधिकतम सन्तुष्टि की प्राप्ति हो। अतः व्यक्ति स्वार्थ के आधार पर अपने आर्थिक निर्णय ले।

लेकिन प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन समग्र विवेकशीलता के विचार पर बल देता है, जिसके अनुसार हमारी आर्थिक प्रणाली इस प्रकार की होनी चाहिए जहां आर्थिक निर्णयों में व्यक्तियों को स्वतंत्रता व स्वहित की प्रेरणा तो हो परन्तु साथ ही साथ उस पर सामाजिक, नैतिक, नियंत्रण भी रहे। दूसरे शब्दों में नैतिक मूल्यों व वैधानिक नियमों से व्यक्ति को सार्वजनिक हित की दिशा में भी मोड़ा जा सके।

iii.. संयमित एवं सह–उपभोग की अवधारणा

प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन में स्वयं द्वारा अर्जित धन से ही उपभोग का उल्लेख किया गया है। उपभोग सम्बन्धी अवधारणाओं को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:–

(क) संयमित उपभोग

वैदिक साहित्य में इस बात का उल्लेख किया गया है कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति को स्वयं द्वारा अर्जित धन का न्यूनतम एवं संयमित उपभोग करना चाहिए। अथर्ववेद में यह उल्लेख किया गया है कि मनुष्य को उतना ही अर्जन करना चाहिए जिसमें वह अपना तथा अपने परिवार का भरण–पोषण कर सकें। इससे अधिक सम्पदा को ग्रहण करने वाला दण्ड का पात्र होगा। भारतीय चिन्तन में इस बात का उल्लेख किया गया है कि व्यक्ति को ईमानदारी से धन कमाना चाहिए तथा अपनी आवश्यकता से अधिक धन नहीं कमाना चाहिए। कौटिल्य (चाणक्य) के अनुसार संयमित उपभोग व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए भी ठीक रहता है। प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन में यह भी उल्लेख किया गया है कि हमें किन–किन वस्तुओं का उपभोग करना चाहिए और किनका नहीं। व्यक्ति वस्तुओं व सेवाओं को ईश्वर का प्रसाद मानते हुए इस प्रकार उपभोग करें कि समाज के कल्याण के लिए अपने जीवन को चलाये रख सके। वस्तुओं व सेवाओं पर वह अपना अधिकार न समझे।

(ख) सह–उपभोग

वैदिक साहित्य के अनुसार व्यक्ति को समाज के अन्य लोगों में बांट कर वस्तुओं का उपभोग करना चाहिए न कि स्वयं अपने आप के लिए। इससे स्पष्ट होता है कि उपभोग समानता व कल्याण पर आधारित होना चाहिए। ऋग्वेद में उल्लेख किया गया है कि भूखे, मित्र, नौकर, अतिथि तथा पशु–पक्षियों को न खिलाकर स्वयं अकेला उपभोग करने वाला व्यक्ति पापी होता

है। जहां पाश्चात्य आर्थिक व्यवस्था अधिकतम उपभोग को अधिकतम सन्तुष्टि का प्रतीक मानती है, वहीं भारतीय आर्थिक चिन्तन में परिश्रमपूर्वक अर्जित धन को उदारता से बांटकर उपभोग करने में अधिकतम सन्तुष्टि की प्राप्ति मानी गयी है। यह मेरा है, यह तेरा है, ऐसा विचार करने वाले व्यक्ति निम्न कोटि के होते हैं। उच्च चरित्र वाले व्यक्तियों के लिए तो सम्पूर्ण विश्व ही कुटुम्ब के समान है। भारतीय संस्कृति में सभी का कल्याण हो तथा सभी की सेवा को ही सार्वभौम मानव धर्म माना गया है।

वर्तमान सन्दर्भ में जब धन तथा सम्पत्ति के असमान वितरण से अमीर–गरीब के बीच की खाई बढ़ रही है, प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन की संयमित व सह–उपभोग की अवधारणा समाज में न्यायपूर्ण वितरण द्वारा समानता की स्थापना में सहायक हो सकती है एवं सामाजिक कल्याण में वृद्धि ला सकती है।

iv. आवश्यकताओं के संदर्भ में दृष्टिकोण

हजारों वर्ष पूर्व ही भारतीय चिन्तन में इस बात का उल्लेख मिलता है कि मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित होती है तथा उनकी पूर्ति के साधन सीमित होते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति की कुछ आवश्यकताएं पूरी ना हो पाने से वह दुःखी हो जाता है। कठोपनिषद में कहा गया है कि कोई व्यक्ति कितना ही धन प्राप्त कर ले कभी उस धन से तृप्त नहीं हो सकता। जिस प्रकार भोजन करने से पेट भर जाता है परन्तु खाने की तृष्णा बनी रहती है, उसी प्रकार धन प्राप्त करने की इच्छा कभी पूरी नहीं होती है। प्राचीन भारतीय साहित्य में यह कहा गया है कि मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित ही नहीं होती अपितु एक आवश्यकता पूर्ण होने पर दूसरी नई उत्पन्न हो जाती है। मनुष्य अपने ज्ञान व परिश्रम द्वारा अपनी आजीविका उत्पन्न करें ताकि समाज में दरिद्रता व अभाव नही हो क्योंकि दरिद्रता से आवश्यकताओं की सन्तुष्टि नहीं हो सकती है।

v.पुरूषार्थ चतुष्टय

प्राचीन भारतीय साहित्य में शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के सुख की कल्पना की गई है जिसे 'चतुर्विध सुख' के नाम से जाना जाता है। 'चतुर्विध सुख' की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य के रूप में धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चार पुरूषार्थों का उल्लेख किया गया है जिन्हें 'पुरूषार्थ चतुष्टय' कहते हैं। प्राचीन भारतीय चिन्तन में इन चार पुरूषार्थों की तुलना नदी से की गयी है। अर्थ व काम नदी के प्रवाह है तथा धर्म व मोक्ष इस नदी के दो तटबन्ध है।

(क) धर्म

प्राचीन भारतीय साहित्य में धर्म का अर्थ बाह्य आडम्बरों से नहीं है अपितु धर्म की अवधारणा बहुत व्यापक है। धर्म सद्‌गुण है व इसका सम्बन्ध आजीविका की शुद्धता से है। श्रेष्ठ बनने के लिए धर्म धारणीय व आचरणीय है। धर्म का आधार नैतिक नियम व सदाचरण है। अतः धर्म समाज में व्यवस्था बनाये रखता है।

(ख) अर्थ

शास्त्रों में मनुष्य की सुख–सुविधा का आधार धर्म को माना गया है एवं धर्म का मूल अर्थ को माना गया है। वेदों में वैभव, मुद्रा तथा सम्पत्ति को धन माना गया है। प्राचीन साहित्य में विद्या, भूमि, सोना–चाँदी, पशु, धन–धान्य, धातु निर्मित उपकरण आदि को अर्थ माना गया है।

(ग) काम

प्राचीन साहित्य के अनुसार काम विश्व को चलाने वाला है। काम सबका कर्त्ता है। जिस प्रकार के व्यक्ति के काम होते हैं व्यक्ति भी वैसा ही बन जाता है। अथर्ववेद में काम ही विविध कामनाओं के रूप में विभिन्न कार्यों का कारण व उत्पत्ति स्थान माना गया है।

(घ) मोक्ष

प्राचीन आर्थिक चिन्तन के अनुसार धन साधन है, साध्य नहीं। अपने आपको इच्छाओं से रहित करते हुए बंधन से छूटना ही मोक्ष है। इसे आवागमन के भवचक्र से मुक्ति भी कहा जाता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1 व्यक्ति एवं समाज के आर्थिक क्रियाकलापों का अध्ययन करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है।

2. मनुष्य द्वारा सम्पादित वह क्रिया जिसका मुद्रा के रूप में मापन संभव है, आर्थिक क्रिया कहलाती है।

3. उपयोगिता का सृजन करना उत्पादन कहलाता है।

4. आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु वस्तुओं व सेवाओं का प्रयोग करना उपभोग कहलाता है।

5. उत्पत्ति के साधन पांच प्रकार के है – भूमि, पूंजी, श्रम, प्रबन्ध व साहस।

6. एक ऐसी व्यवस्था जिसके तहत किसी निश्चित क्षेत्र में

आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता है, अर्थव्यवस्था कहलाती है।

7. ऐसी आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पत्ति के साधनों पर निजी व्यक्तियों का स्वामित्व व नियत्रंण होता है, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था कहलाती है।
8. ऐसी आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पत्ति के सभी साधनों पर सरकार द्वारा अभिव्यक्त सम्पूर्ण समाज का स्वामित्व होता है, समाजवादी अर्थव्यवस्था कहलाती है।
9. ऐसी आर्थिक प्रणाली जिसमें निजी और सार्वजनिक क्षेत्र दोनों का सह अस्तित्व होता है, मिश्रित अर्थव्यवस्था कहलाती है।
10. प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन उन सभी आर्थिक विचारों का सार है, जिन्हें भारत के सभी प्राचीन ग्रन्थों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।
11. एकात्म मानव का अर्थ है, मानव शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा का एकीकृत रूप।
12. चतुर्विध सुख (शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा के सुख) की प्राप्ति के लिए प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन में चार पुरूषार्थों धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का उल्लेख किया गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्न में से कौनसी गतिविधि आर्थिक क्रिया है?
   (अ) विद्यालय की दो कक्षाओं के मध्य खेला गया मैत्री मैच
   (ब) माता–पिता द्वारा बच्चों की देखभाल
   (स) अध्यापक द्वारा कक्षा में पढ़ाना
   (द) विद्यालय में होने वाली प्रार्थना सभा
2. भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप हैः–
   (अ) पूंजीवादी (ब) समाजवादी
   (स) मिश्रित (द) कोई नहीं
3. निम्न में से कौनसी आर्थिक प्रणाली लोगों को निजी सम्पत्ति का अधिकार देती हैः
   (अ) पूंजीवादी
   (ब) समाजवादी
   (स) पूंजीवादी व समाजवादी दोनों
   (द) कोई नहीं
4. निम्न में से कौनसा एक मिश्रित अर्थव्यवस्था का गुण नहीं हैः–
   (अ) व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संरक्षण
   (ब) वर्ग संघर्ष में कमी
   (स) उपभोक्ताओं को अधिक सन्तुष्टि
   (द) आर्थिक उतार–चढ़ावों पर नियन्त्रण
5. प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन में मनुष्य को किस रूप में प्रस्तुत किया गया हैः–
   (अ) आर्थिक मानव (ब) उत्पत्ति का साधन
   (स) एकात्म मानव (द) उपरोक्त सभी

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अर्थव्यवस्था किसे कहते है?
2. अर्थशास्त्र का अर्थ बताइये।
3. आर्थिक प्रणाली के प्रकारों के नाम बताइये।
4. उत्पत्ति के साधनों के नाम लिखिए।
5. उत्पादन किसे कहते है?
6. उपभोग को परिभाषित कीजिए।
7. उत्पादन व उत्पादक का एक उदाहरण दीजिए।
8. वितरण का अर्थ बताइये।
9. श्रम किसे कहते हैं?
10. समाजवादी अर्थव्यवस्था का अर्थ लिखिए।
11. प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन के किन्ही तीन स्रोतों के नाम लिखिए।
12. प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन के स्रोत के रूप में चारों वेदों के नाम बताइये।
13. 'चतुर्विध सुख' क्या है?
14. चार पुरूषार्थों के नाम लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. आर्थिक क्रिया किसे कहते है? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

2. सम्पत्ति तथा पूंजी में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. अर्थव्यवस्था की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. पूंजीवादी व समाजवादी अर्थव्यवस्था में क्या अन्तर है?
5. एकात्म मानव की अवधारणा को समझाइये।
6. आवश्यकताओं के सन्दर्भ में प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण को समझाइये।
7. उत्पादन व उपभोग में सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।
8. मिश्रित अर्थव्यवस्था के गुणों का उल्लेख कीजिए।
9. प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन के किन्ही तीन स्रोतों का उल्लेख कीजिए।
10. "प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन परम्परा का अध्ययन आर्थिक प्रणाली का एक नया विकल्प है।" व्याख्या कीजिए।
11. समग्र विवेकशीलता की अवधारणा को समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. आर्थिक क्रियाओं व गैर आर्थिक क्रियाओं में अन्तर बताइये।
2. उत्पत्ति के प्रमुख साधनों की व्याख्या कीजिए।
3. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रमुख लक्षण बताइये।
5. संयमित उपभोग तथा सह–उपभोग की अवधारणा की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए।
6. 'पुरूषार्थ चतुष्टय' पर एक लेख लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1.(स) 2.(स) 3.(अ) 4.(स) 5.(स)